पद ७

(रागः खमाज जिल्हा - तालः त्रिताल धीमा)
श्रीप्रभु माझा काय करील ते खरें। मी म्हणता मज कोण विचारे।
व्यर्थ मूर्ख जन ते।।१।। अहंकार अंकुर मनी फुटता। मोह मायाजळी
क्रीडा करिता। जलविण सागर ते।।२।। सार्वभौम सत्तापदी
असता। परस्त्री सुख धनी हाव दावता। शाश्वत विण जीव ते।।३।।
काम क्रोध मद मत्सरी रमता। दुष्ट दुराकृति ध्येय साधता।
मोक्षविना नर ते।।४।। यावरी निरसन एकचि पहाता। इच्छित व्हावे
तत्पर आतां। नसता दुर्मिळ तें।।५।। आत्मसमर्पण प्रभुसी करता।

श्रीगुरु मंत्रा निशिदिनी स्मरता। सिद्ध प्रभु रक्षिल रे।।६॥